विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत दिनांक 12-04-2021

वर्ग सप्तम शिक्षक राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

संधि विच्छेद, संस्कृत में संधि, संस्कृत व्याकरण

- संस्कृत में संधि विच्छेद

दो वर्णों के निकट आने से उनमें जो विकार होता है उसे 'सन्धि' कहते है। इस प्रकार की सन्धि के लिए दोनों वर्णो का निकट होना आवश्यक है, क्योकि दूरवर्ती शब्दो या वर्णो में सन्धि नहीं होती है। वर्णो की इस निकट स्थिति को ही सन्धि कहते है। अतः संक्षेप में यह समझना चाहिए कि दो वर्णो के पास-पास आने से उनमें जो परिवर्तन या विकार होता है उसे संस्कृत व्याकरण में सन्धि कहते है। उदाहरण -

हिम + आलयः = हिमालयः

रमा + ईशः = रमेंशः

सूर्य + उदयः = सूर्योदयः

संस्कृत संधि के भेद/प्रकार

संस्कृत भाषा में संधियां तीन प्रकार की होती है-

स्वर संधि

व्यंजन संधि

विसर्ग संधि

1. **स्वर संधि - अच् संधि**

नियम - दो स्वरों के मेल से होने वाले विकार (परिवर्तन) को स्वर-संधि कहते हैं। उदाहरण-

हिम+आलय= हिमालय।

रवि + इंद्र = रवींद्र

मुनि + इंद्र = मुनींद्र

नारी + इंदु = नारींदुई

मही + ईश = महीश

भानु + उदय = भानूदय

लघु + ऊर्मि = लघूर्मि

वधू + उत्सव = वधूत्सव

भू + ऊर्ध्व = भूर्ध्व